

वद्री तो वढाई आ भक्तिनि खे भाई आ साई सदां जीओ
 लिंगड़ी जिनि लाई आ हरी भक्ति पाई आ साई सदां जीओ॥
 कमल कोमल करुणा सिंधु दया सागर दीन बंधु
 अति उदार भक्ति भण्डार चालिड़ी सुहाई आ॥
 सेवक सुखद शरणिपाल भक्त वत्सल भुज विशाल
 गुण गम्भीर विजई वीर परा भक्ति पाई आ॥
 अमल चरित आनंद कंद अमडि नयन चकोर चंद
 राम कथा रसजा धाम गायो रघुराई आ॥
 नेह धनी भक्त भूप संत मूरति हरि सरूप
 भारत भुषण सदां अदूषण जग में कीरति छाई आ॥
 ज्ञान भान गुणातीत अतुल तेज अति विनीत
 नीति निपुण विवेक धाम रस जी राह बताई आ॥
 स्वामिनि पद कंज भंवर कथा रसिक जन मन हर
 श्रद्धा सुलभ दम्भ दुर्लभ लखनि गति लखाई आ॥
 विदेह जियां जीवन मुक्त राजभोग योग जुगति
 सीयाराम गोद करे मैगसि हुलसाई आ॥